

## সূচি

|                            |     |
|----------------------------|-----|
| ডোডো তাতাই পালাকাহিনি      | ১৯  |
| ডোডো-তাতাই পালাকাহিনি      | ২৩  |
| ছুটির দিনের ছবি            | ২৬  |
| ডোডো-তাতাই এবং কুকুরছানারা | ২৯  |
| ব্যাঙাচিদের লেজ            | ৩২  |
| নকুলবাবু লোক খারাপ নন      | ৩৫  |
| চক্ষুকাণ্ড                 | ৩৮  |
| হাস্য সম্মেলন              | ৪১  |
| দৌড়বীর রণধীর              | ৪৪  |
| বিশ্ব-শিশুবর্ষে ডোডো-তাতাই | ৪৮  |
| ডোডো-তাতাইয়ের ঘুড়ি       | ৫৩  |
| একটি কুকুরের উপাখ্যান      | ৫৯  |
| কাণ্ডজ্ঞান                 | ৯৭  |
| চুরিবিদ্যা                 | ১০১ |
| কুকুরের বকলস               | ১০৩ |
| নৈশকাহিনি                  | ১০৫ |
| কাঠবাদাম                   | ১০৮ |
| কালীঘাটের পাখা             | ১১১ |
| বিদ্যুৎ বিভ্রাট            | ১১৩ |
| ডাকাতের হাতে               | ১১৬ |
| ভয়ঙ্কর                    | ১১৮ |
| পদ্মাসন                    | ১২০ |
| সেই আমি                    | ১২২ |
| শিশুশিক্ষা                 | ১২৪ |
| ঘুম                        | ১২৬ |
| গামছা                      | ১২৯ |
| টাকা-পয়সা                 | ১৩১ |
| পাগলের কাণ্ডজ্ঞান          | ১৩৩ |
| ভিথিরি                     | ১৩৫ |
| পদবী ও নাম                 | ১৩৮ |
| ছারপোকার এপিটাফ            | ১৪০ |

|                      |     |
|----------------------|-----|
|                      | ১৪২ |
| চশমা                 | ১৪৫ |
| কেশচর্চা             | ১৪৭ |
| দাম্পত্যজীবন         | ১৪৯ |
| বিলিতি ভোজনালয়      | ১৫২ |
| ভাগ্যফল              | ১৫৪ |
| বিশেষজ্ঞ             | ১৫৭ |
| উচ্চারণ              | ১৫৯ |
| বয়েস                | ১৬১ |
| ছাতা                 | ১৬৪ |
| র্যাডিস উইথ মোলাসেস  | ১৬৬ |
| স্বপ্ন নিয়ে         | ১৬৯ |
| ঘড়ি                 | ১৭১ |
| কলকাতার যানবাহন      | ১৭৪ |
| দরজি                 | ১৭৬ |
| সংখ্যাতত্ত্ব         | ১৭৮ |
| মাতালের কাণ্ডজ্ঞান   | ১৮১ |
| ভুলোমন মাস্টারমশাই   | ১৮৩ |
| ভূতের কাণ্ডজ্ঞান     | ১৮৬ |
| বানরের কাণ্ডজ্ঞান    | ১৮৮ |
| কিঙ্কর-কিঙ্করী       | ১৯১ |
| ডাক্তার-ডাক্তার      | ১৯৪ |
| শিক্ষাদীক্ষা         | ১৯৬ |
| দাঁত                 | ১৯৯ |
| টেলিফোন              | ২০১ |
| পাখি সব করে রব       | ২০৪ |
| পাঠ করি আনন্দে       | ২০৬ |
| গরম                  | ২০৮ |
| আমি কীরকমভাবে        | ২১০ |
| মন মোর মেঘের সঙ্গী   | ২১৩ |
| গরু                  | ২১৫ |
| ভ্রমণকাহিনি          | ২১৮ |
| প্রসূতি সদন          | ২২১ |
| বই                   | ২২৩ |
| প্রেশার কুকার        | ২২৬ |
| যা চলে তাই গাড়ি     | ২২৮ |
| প্রিয়তমাসু          | ২৩১ |
| নিজের ওজন নিজে বুঝুন |     |

|                                     |     |
|-------------------------------------|-----|
| জীবজন্তুর কথা                       | ২৩৩ |
| শেষ কাণ্ডজ্ঞান                      | ২৩৬ |
| নিবুমপুর                            | ২৩৯ |
| হাসতে হাসতে আমেরিকা                 | ২৮৭ |
| সাঁওতাল বিদ্রোহের রোজনামা           | ৩৮৩ |
| কোথায় যাচ্ছেন তারাপদবাবু?          | ৪৪৯ |
| মনে আছে, কলকাতা                     | ৪৫১ |
| মাথা নিচু করে                       | ৪৫২ |
| নিজেই নিজের কাছে                    | ৪৫২ |
| শেষ খলিফা                           | ৪৫৩ |
| প্রেমপত্র                           | ৪৫৩ |
| ভ্রমণকাহিনী ১                       | ৪৫৪ |
| জাহাজের বাঁশি                       | ৪৫৪ |
| মানস রায়চৌধুরীর মনস্তত্ত্বে ডি ফিল | ৪৫৫ |
| প্রাপ্তি উপলক্ষে                    |     |
| তুমি কি ঝুলন্ত                      | ৪৫৫ |
| আদিগন্ত                             | ৪৫৬ |
| তখনো স্বপ্নের                       | ৪৫৬ |
| আমার বিষয়টা                        | ৪৫৭ |
| আলো আলো আলো                         | ৪৫৭ |
| মনে হয়                             | ৪৫৮ |
| কোথায় যাচ্ছেন তারাপদবাবু           | ৪৫৮ |
| লাল ভালোবাসো                        | ৪৫৯ |
| কোন অবসরে                           | ৪৫৯ |
| ভ্রমণকাহিনী ২                       | ৪৫৯ |
| নোয়ার নৌকার মতো আমার বিছানা        | ৪৬০ |
| তোমাদের কথা                         | ৪৬১ |
| 'হু কাম্‌স্ দেয়ার'                 | ৪৬২ |
| সত্য ঘটনা অবলম্বনে                  | ৪৬২ |
| যা কিছু জলের মধ্যে                  | ৪৬৩ |
| হলুদ টিকেট                          | ৪৬৩ |
| কথায় কথায়                         | ৪৬৪ |
| শাদা                                | ৪৬৪ |
| জটিল                                | ৪৬৫ |
| ইলিশ                                | ৪৬৫ |
| রোলকল                               | ৪৬৫ |

|  |     |
|--|-----|
|  | ৪৬৬ |
| চলে গেলো                               | ৪৬৬ |
| দোতলায়                                | ৪৬৭ |
| কাজ সেরে                               | ৪৬৭ |
| কে জানে                                | ৪৬৮ |
| ছবির চাকা                              | ৪৬৮ |
| সূর্যমুখী                              | ৪৬৯ |
| প্রীতি উপহার                           | ৪৬৯ |
| কদম-কদম কদম-কদম                        | ৪৭০ |
| ভ্রাম্যমান                             | ৪৭০ |
| অশোক গাছের ছায়া                       | ৪৭১ |
| মার্জনা বা ক্ষমা                       | ৪৭১ |
| মাঝে-মাঝে ছায়া                        | ৪৭১ |
| প্রেম                                  | ৪৭১ |
| এবার বসন্তকালে                         | ৪৭২ |
| দরজা খুললে                             | ৪৭৩ |
| শিকারী কুকুরের সঙ্গে                   | ৪৭৩ |
| ছয় মাস পর শাদা পাতা                   | ৪৭৪ |
| জলের ভিতরে                             | ৪৭৪ |
| নীলদিগন্তে এখন ম্যাজিক                 | ৪৭৫ |
| নীলদিগন্তে এখন ম্যাজিক                 | ৪৭৯ |
| কৃষ্ণিবাস ১৮ বছর, কৃষ্ণিবাস রায় ৬ বছর | ৪৭৯ |
| ভিথিরি                                 | ৪৮১ |
| হে মুরলীধর বালিকা                      | ৪৮১ |
| তিনটি কুকুর                            | ৪৮২ |
| একজন আধা-কবি                           | ৪৮২ |
| হাতল ভাঙ্গা                            | ৪৮৩ |
| শুধু মাত্র ছায়া                       | ৪৮৪ |
| প্রেস নোট                              | ৪৮৪ |
| মানে হয় না                            | ৪৮৪ |
| একটা পুরানো লেপ                        | ৪৮৪ |
| যে যার জীবন                            | ৪৮৪ |
| আমিও একাকী                             | ৪৮৫ |
| হালফ্যাশানের দুঃখ                      | ৪৮৫ |
| বকুলবাগানে হরিণ                        | ৪৮৬ |
| একুশতলা বাড়ির কার্নিশে                | ৪৮৬ |
| গত শতাব্দীর শীত                        | ৪৮৭ |
| এইভাবে উনিশ শো বাহান্তর                | ৪৮৭ |
|  | ৪৮৮ |

|                                       |     |
|---------------------------------------|-----|
| দেরি হয়ে গেছে                        | ৪৮৯ |
| পশুর স্মৃতিতে                         | ৪৮৯ |
| গণেশ ঠাকুর প্রণাম করে                 | ৪৮৯ |
| প্রবেশিকা সার্টিফিকেট                 | ৪৯০ |
| আবার দেখা হবে                         | ৪৯১ |
| পরাধীন ভাবনা আমার                     | ৪৯১ |
| হে ক্লাস্ত লেখক                       | ৪৯২ |
| ফাল্গুন                               | ৪৯২ |
| কৌতুক না কৌতুহল                       | ৪৯৩ |
| আমার শত্রুদের দেখলে                   | ৪৯৩ |
| কি যেন চেয়েছিলাম                     | ৪৯৪ |
| শীত এসে গেলো                          | ৪৯৪ |
| জন্মদিন, যীশুখ্রীষ্ট থেকে রবীন্দ্রনাথ | ৪৯৫ |
| ঘুমের বদলে                            | ৪৯৬ |
| হলেও হতে পারতো কবিতা                  | ৪৯৬ |
| দুঘটনা                                | ৪৯৭ |
| একেকদিন রক্তের মধ্যে                  | ৪৯৭ |
| এখন                                   | ৪৯৮ |
| একজন সম্যাসীকে                        | ৪৯৮ |
| নদীর ভিতর থেকে                        | ৪৯৯ |
| পরিবার-পরিকল্পনা                      | ৪৯৯ |
| মন্দিরের কুকুর                        | ৫০০ |
| বয়েস                                 | ৫০০ |
| ছেঁড়া নিশান                          | ৫০১ |
| মাতৃভাষা                              | ৫০২ |
| কম বয়সে যীশুখ্রীষ্ট                  | ৫০২ |
| স্থায়ী আমানত                         | ৫০৩ |
| কালু, আলো জ্বালো                      | ৫০৩ |
| শিশুশিক্ষা                            | ৫০৪ |
| ক্রমাগত স্বাধীনতা চাই                 | ৫০৪ |
| সামান্য                               | ৫০৫ |
| যথাক্রমে                              | ৫০৫ |
| এখন আর সম্ভব নয়                      | ৫০৬ |
| স্তব্ধ দুপুর                          | ৫০৭ |
| কি রকম ব্যবহার                        | ৫০৭ |
| লেট সিটি এডিশন                        | ৫০৮ |

|                         |     |
|-------------------------|-----|
| পাতা ও পাখিদের আলোচনা   | ৫০৯ |
| আগের দিন সকালবেলা       | ৫১৩ |
| ভাঁট-শালিক              | ৫১৩ |
| সুটকেশটা নামাও          | ৫১৪ |
| আমরা অনবরত              | ৫১৪ |
| কমলালেবু                | ৫১৫ |
| সানরাইজ                 | ৫১৫ |
| সীমানা                  | ৫১৬ |
| শব্দের অভাবে            | ৫১৬ |
| হতে পারে, না-ও হতে পারে | ৫১৬ |
| ছুটির দিনের সকাল        | ৫১৭ |
| একদিন পিঁপড়েরা আসে     | ৫১৭ |
| আমাদের সুখের ঘুম        | ৫১৮ |
| কে যেন রেশম             | ৫১৮ |
| ক্রমাগত ভবিষ্যত         | ৫১৯ |
| ছদ্মনামে                | ৫১৯ |
| শিশুপাঠ্য               | ৫২০ |
| আমাদের মত নয়           | ৫২০ |
| হচ্ছে না                | ৫২১ |
| নাম দিতে চাই            | ৫২১ |
| আমাদের অনন্ত অপেক্ষা    | ৫২২ |
| স্বাভাবিক               | ৫২২ |
| শিশুগণ                  | ৫২৩ |
| কেমন গোধূলি             | ৫২৩ |
| সমবেদনা                 | ৫২৪ |
| মধ্যরাত্রির বিমান       | ৫২৪ |
| শিয়ালদহ                | ৫২৫ |
| নির্বিকার               | ৫২৫ |
| রঙীন প্রজাপতি           | ৫২৬ |
| অনবরত                   | ৫২৬ |
| বিপদ এবং বিপন্ন         | ৫২৭ |
| দিন ও দুর্দিনের মধ্যে   | ৫২৭ |
| ছাইদান থেকে             | ৫২৮ |
| হলুদ আভায়              | ৫২৯ |
| অন্ধকারের মধ্যে         | ৫২৯ |
| দেখতে পাই               | ৫৩০ |
| উনি কে?                 | ৫৩০ |

|                           |            |
|---------------------------|------------|
| রঙীন ছাতা                 | ৫৩১        |
| অভিভূত                    | ৫৩১        |
| দুটি অসহায় মেঘ           | ৫৩২        |
| গত জীবনের কথা             | ৫৩২        |
| সাদা ছেলে খেলা            | ৫৩৩        |
| পরিচয়-পত্র               | ৫৩৩        |
| আমাদের চাই                | ৫৩৪        |
| পদ্মফুল                   | ৫৩৫        |
| কম বেশি                   | ৫৩৫        |
| খাকি জামা                 | ৫৩৬        |
| হেঁচো                     | ৫৩৬        |
| তদন্ত কমিশন               | ৫৩৬        |
| রাজধানী থেকে              | ৫৩৭        |
| দুঃখের মা-বাবা            | ৫৩৭        |
| বিশ্বমহিলা বর্ষ উপলক্ষে   | ৫৩৮        |
| মধ্যপ্রাচ্য থেকে ফিরে     | ৫৩৯        |
| পাতা ও পাখিদের আলোচনা     | ৫৪০        |
| <b>ভালোবাসার কবিতা</b>    | <b>৫৪১</b> |
| বনানী                     | ৫৪৫        |
| শীত আসে এবং চলে যায়      | ৫৪৮        |
| সাদা কালোয়               | ৫৪৮        |
| হে মল্লিকা কুসুম          | ৫৪৯        |
| ফুলের নামে নাম            | ৫৪৯        |
| ভুলে না যাওয়ার মত        | ৫৫০        |
| বলাকা                     | ৫৫০        |
| কার ছবি, কে ছিঁড়ে ফেলে?  | ৫৫১        |
| ভ্রমর ও মৌমাছি            | ৫৫২        |
| দুর্বলতা                  | ৫৫২        |
| সুন্দরী                   | ৫৫৩        |
| তুমি আজো আছো              | ৫৫৩        |
| কতদিন পরে                 | ৫৫৩        |
| ভিন্নকাল                  | ৫৫৪        |
| দুর্ঘটনার কারণ            | ৫৫৪        |
| ভোরবেলা                   | ৫৫৫        |
| প্রথম বরফ                 | ৫৫৫        |
| তোমার বাসা কোথায়         | ৫৫৬        |
| প্রথম ভালোবাসা, প্রথম শীত | ৫৫৬        |

|                     |     |
|---------------------|-----|
| একাকিনী             | ৫৫৬ |
| গান লেখা হলো না     | ৫৫৭ |
| আয়ু যায়           | ৫৫৮ |
| তুমি আছো কিংবা ছিলে | ৫৫৮ |
| আগুন                | ৫৫৮ |
| জলের মতো            | ৫৫৯ |
| সাহসিকা             | ৫৫৯ |
| মমতাজমহল            | ৫৬০ |
| অনায়াস-সহজ         | ৫৬১ |
| তুমি আজো            | ৫৬১ |
| ডুবে যায় পড়শিনী   | ৫৬২ |
| মনে নেই             | ৫৬২ |
| গ্রন্থ-প্রসঙ্গ      | ৫৬৩ |